ISSN-0975-2560

पारमिता

(वर्ष 9 अंक 9)

2019

दर्शन परिषद् (मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़)
चरन् वै मधु विन्दति
स्थापना 1994

सम्पादक
जय प्रकाश शाक्य

दर्शन परिषद
(मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़)
पंजीयन क्रमांक 04/14/01/08825/06
email:mpcgdarshanparishad@gmail.com

ISSN-0975-2560

पारमिता

(वर्ष 9 अंक 9)

सम्पादक

जय प्रकाश शाक्य

दर्शन परिषद

(मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़)

पंजीयन क्रमांक 04/14/01/08825/06

email: mpcgdarshanparishad@gmail.com

रामचरित मानस में राम तत्त्व

प्रो सविता गुप्ता
दर्शन शास्त्र विभाग,
डॉ.हरीसिंह वि.वि.
सागर म.प्र.

काव्य और दर्शन में साधनरत भेद होते हुए भी साध्यगम अभेद है। दर्शन की साधना सत्य साक्षेप और काव्य की सौन्दर्य साक्षेप है। दोनों की परिणति परमतत्व शिव की निर्विकल्प आत्मानुभूति में होती है जो एक साथ ही कवि और दार्शनिक दोनों का लक्ष्य है जिसका प्रकटन वेद और उपनिषदो में ब्रह्म पद से हुआ है। तुलसी उसे 'राम' पद से अभिव्यक्त करते हैं। नाम में भेद होने पर भी दोनों का निहितार्थ एक ही है। यदि कहा जाये कि वेदों का ब्रह्म और तुलसी के राम एक ही तत्त्व के दो नाम हैं, तो अतिशयाक्ति नहीं होगी। तुलसी ने वेद वर्णित ब्रह्म को रामचरित मानस के काव्य रस में घोल कर रामरूप में जनमानस के लिए अत्यंत सरल, सहज, सुगम और बोधगम्य बना दिया।

वेद और उपनिषदों में वर्णित ब्रह्म का स्वरूप मुख्यतः पाँच पक्षों के आधार पर देखा जा सकता है–

1. एकत्व या अद्वयत्व– जो ब्रह्म के विभुत्व, सर्वव्यापकत्व और सर्वात्मकत्व का द्योतक है।
2. सत्व– इसमें ब्रह्म का नित्यत्व, अनादित्व, अनन्यत्व, अविकियत्व एवं सर्वधारत्व समाविष्ट है।
3. चित्व– यह ब्रह्म के ज्ञानत्व, प्रकाशत्व, स्वयंज्योति और सर्वावभासकत्व को इंगित करता है।
4. आनन्द– ब्रह्म का निरतिशयत्व रसतत्व और परमपुरूषार्थ रूप है।
5. निर्गुणतत्व– इसमें ब्रह्म का निर्विशेषत्व, निराकारत्व, निष्क्रियत्व, ,निर्विकल्पपत्व एवं शुद्धत्व आते हैं।

तुलसी के राम में इन सभी गुणों का समाहार पाया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि एक ही परमतत्त्व की शाब्दिक व्याख्या ब्रह्म और राम पर से की जा रही है। तुलसी के रामचरित मानस में राम के निराकार और साकार दोनों रूपों का निर्वचन मिलता है तुलसी राम के द्वारा ब्रह्मण्ड के परमतत्त्व के निर्गुण स्वरूप का प्रतिपादन करते हुए सृष्टि की